: अध्याय पाँचवा :

: उ प सं हा र :

अध्याय पाँचवा

उ प सं हा र

साहित्य की सभी विधाओं में नाटक एक प्रभावी विधा है। साहित्य में सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब या चित्रण मिलता है। इसलिए नाटक में भी युगीन जीवन का प्रतिबिंब मिलता है। अन्य विधाओं की तुलनामें नाटक इसलिए प्रभावी है कि, उसके पात्र जीवन के यथार्थ पात्रों की तरह अभिनय करते हुये हमारे सामने आ जाते हैं। अत: नाटक देखते समय हम यथार्थ का अत्यधिक अनुभव करते हैं।

जीवन के क्षण क्षण के राग-विराग, पल-पल के आनंद विषाद, तृष्णा और तृप्ति आदि के कारण व्यक्ति के निजी मन में, दो व्यक्तियों में व्यक्ति और परिवार में तथा व्यक्ति और समाज में जो भी संघर्ष होता है - और यह संघर्ष शाश्वत है - उसके हु-ब-हु चित्रण नाटक में होता है।

आज कल समस्या नाटक का विशेष प्रचार होता जा रहा है। जीवन परिवर्तनशील है, इसलिए समस्याएँ भी परिवर्तित रूप में प्रस्तुत होती है। एक जमाने में हिन्दू समाज में, खास तौरपर, उच्च हिन्दू समाज में विधवा-विवाह एक समस्या थी, जो आज बहुत कुछ क्षीण हो गई है। संयुक्त परिवार के कारण दो पीढियों के बीच के अंतर या तनाव के कारण, दो जीवन पध्दतियों के विरोध के कारण, उत्पन्न होनेवाली समस्याएँ आज भी बराबर बनी है।

नाटककार इन्हीं में से या और इसी प्रकार के समस्या को लेकर कथावस्तु को प्रस्तुत करता है। ` अलग-अलग रास्ते ` नाटक ऐसी ही एक नारी सम्बन्धी समस्या को लेकर लेखकने प्रस्तुत किया है।

` अलग-अलग रास्ते ` में नारी जीवन के नव-जागरण का यथार्थ रूप और उसके पुरातन संस्कार दोनों को एक साथ प्रस्तुत किया गया है। नारी, चाहे पत्नी हो या पुत्री, उसे पुरूष के समान समाज में प्रतिष्ठा नहीं मिलती। नारी का अंतर्व्दन्द्व यही है कि - पारिवारिक मिथ्या प्रतिष्ठा को वह सामाजिक प्रतिष्ठा में नहीं बदल सकती। पुराने संस्कार उसे पैर पकड़कर पीछे घसीटते हैं, और नयी सामाजिक चेतना उसे आगे बढ़ने को आकर्षित करती है। इस व्दन्द्व में नारी आज जीवन बीता रही है। और यही व्दन्द्व पुरूष सत्ता के प्रति नारी के सामाजिक स्वभिमान के संघर्ष रूपमें बदल जाता है। यही नाटक का मूल स्वर है।

उपेन्द्रनाथ अश्क का ` अलग-अलग रास्ते ` समस्या नाटक है। और इसमें वैवाहिक, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का चित्रण हुआ है। विशेषत: रानी और राज इन नारी पात्रों के रूप में। उसी प्रकार ताराचन्द, त्रिलोक, मदन, पूरन आदि पुरूष पात्रों को भी इसी समस्यामें गूँथा लिया गया है। इस नाटक में सभी पात्र अपना अपना अलग रास्ता निकालते है। रानी और पूरन विद्रोही पात्र है। किंबहुना वे नव-जागरण भी करनेवाले पात्र हैं। सुशिक्षित, आधुनिका नारी अब अत्याचार नहीं सह सकती। वह अपने पैरोंपर खड़ा रहना चाहती है।इसलिए रानी भी अपने पति के घर न जाकर पूरन के कहनेपर

नौकरी करने को तैयार होती है। पूरन भी पुरातन मूल्यों और सिध्दान्तों का उन्मूलन करना चाहता है। इसलिए वह अपने पिता ताराचंद जैसे पुरातनवादी पिता का न चाहनेपर भी रानी को नौकरी करने को विवश करता है।

परंतु राज अपने पतिव्दारा पतिता होकर भी, भले ही पतिने दूसरी शादी की है, फिर भी उसके चरणों की पूजा करना चाहती है। वे अपने पिताके समान परंपरा और रूढ़ियोंके जालमें फँसी हुई है। इसलिए वह अपने स्वाभिमान को ठोकर मारकर गुलामी का जीवन बिताना पसंद करती है।

इसके अतिरिक्त त्रिलोक और मदन - एक है वकील तो दूसरा प्रोफेसर। परंतु उन दोनोंपर शिक्षाका उतना असर नहीं हुआ है, जितना की अपेक्षित है। त्रिलोक अपने पत्नी के घर से मकान और मोटर की अभिलाषा न पूरी होनेपर पत्नी को छोडता है, तो मदन आधुनिक विचारवाला है। इसलिए वह राजसे शादी हो जानेपर भी अपनी प्रेमिका सुदर्शनासे शादी कर लेता है।

इसी प्रकार हम देखते है कि, उपेन्द्रनाथ `अश्क` ने `अलग-अलग रास्ते` के सभी पात्रोंको अपनी विशेषाता देकर अलग अलग किया है। इसलिए हम यह कह सकते है कि इस नाटक के हर पात्रका अपना अलग अलग मार्ग है, रास्ता है। अतएव `अलग-अलग रास्ते` नाटक का शीर्ष, अपने नाम में भी सार्थकता, उचितता और उदात्तता रखता है।

साहित्यशास्त्र में एक सिध्दान्त है कि, मन के भाव को स्पष्ट शब्दोंमें कहने की अपेक्षा सूचित करने में कलात्मकता है। उपनिषदों में भी कहा है -

" परोक्षप्रिया हि वै देवा: । "

अर्थात् देवों को सूचक वाणी अच्छी लगती है। इस नाटक में नारी समस्या को विभिन्न पात्रों के व्दारा प्रस्तुत किया गया है। और उनका हल सूचित किया गया है। पूर्ण स्पष्ट रूपमें हल का विश्लेषण या विवरण नहीं दिया गया। यही नाटककार ' अश्क ' की कलात्मकता है।

-000-